आपातकाल में सृजन फुलवारी

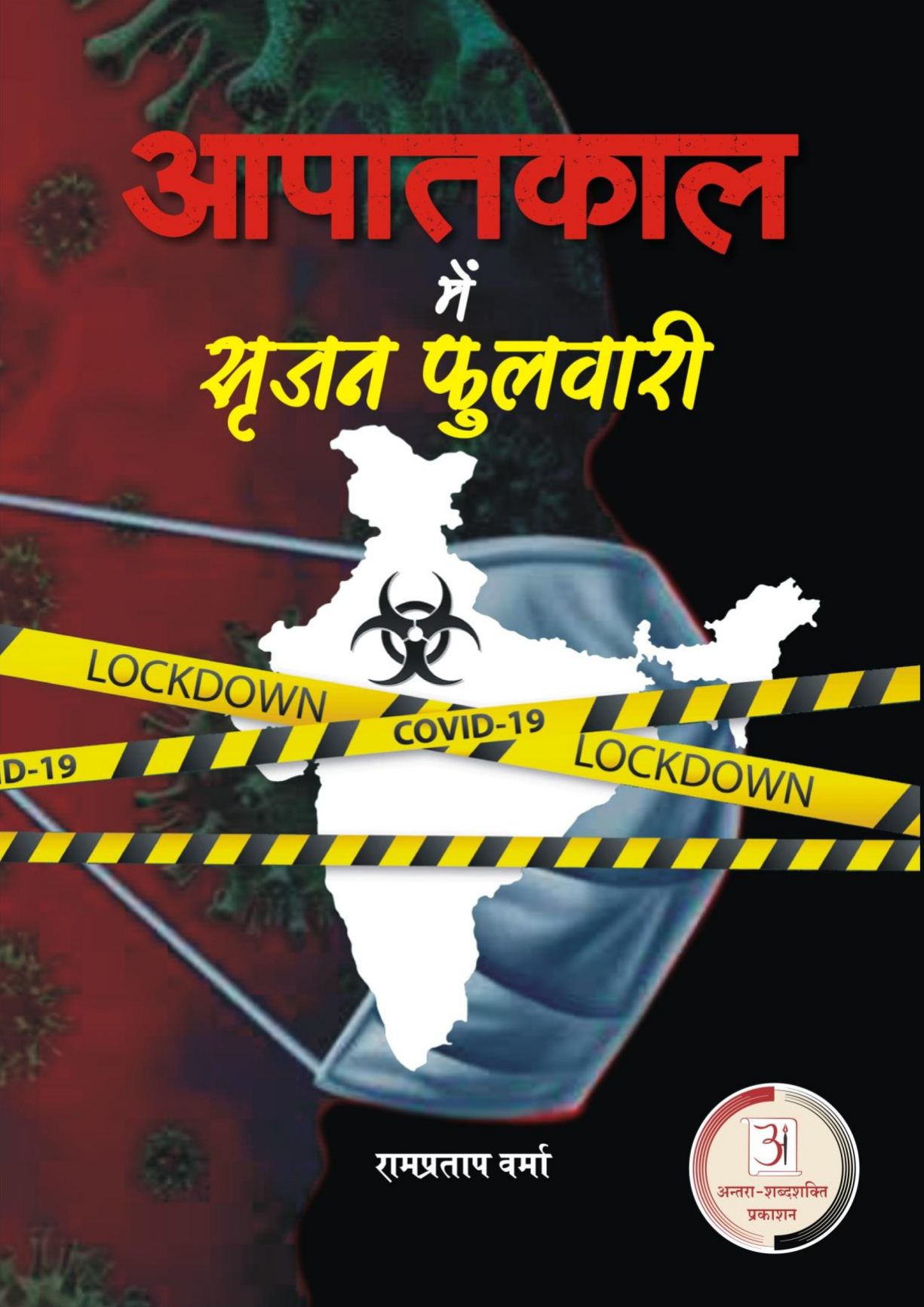

रामप्रताप वर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रामप्रताप वर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-167-1

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 **रामप्रताप वर्मा**

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RAMPRATAP VERMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	उठना होगा, एकजुट होकर	6
2.	आत्मचिन्तन, मूल्यांकन और समीक्षा	7
3.	ये साज़िशों का दौर है	8
4.	मैं बारम्बार कहता हूँ	9
5.	बेटियां हमारी आन हैं	10
6.	आओ मिल कर दिया जलाएं	11
7.	प्रणाम है	12
8.	हौले से मुस्काना तेरा	13
9.	समय	14
10.	सरस्वती वंदना	15
11.	भूख	16
12.	धर्म और विज्ञान	17
13.	हार ही जीत है	18
14.	सफलता	19
15.	माँ	20
16.	हमें रुकना होगा!	21

उठना होगा, एकजुट होकर

उठना होगा, एकजुट होकर
बनाना होगा, बांध!
तभी होगा सुरक्षित!
हमारा घर, हमारा मान! हमारा सम्मान!
बदलना होगा रुख, उस विनाशकारी नदी का!
जो बहाने को आतुर है, हमारी बस्ती!
जो हमारा सदियों से करती आयी है, नाश! विनाश!
जिसकी हम करते हैं पूजा, चढाते हैं फूल!
समय से पहले, बनानी होगी योजना!
समझना होगा उसके विनाशकारी स्वरूप को!
समझना होगा रूढ़ियों, परम्पराओं और मान्यताओं को!
जो हमारे लिए हो रही है सिद्ध-आत्मघाती!
जहां आज भी फंसे हैं हम!
परखना होगा विज्ञान और तर्क की कसौटी पर!
गढना होगा एक नया मानदंड!
तभी होगा उजियारा हमारे जीवन में!
जलाना होगा ज्ञान का दीप,
बजाना होगा घंटा हमें,
विद्यालयों और विश्व विद्यालयों का!
तभी छंटेगा तम, खिलेगा नव प्रभात!
उठना होगा, एकजुट होकर बनाना होगा, बांध!
तभी होगा सुरक्षित! हमारा घर, हमारा मान! हमारा सम्मान!

आत्मचिन्तन, मूल्यांकन और समीक्षा

आत्मचिन्तन, मूल्यांकन और समीक्षा,
हमें करना है कि,
क्या पाया! क्या खोया हमने!
विकास करते-करते,
हम जाने-अनजाने,
अखिल मानवता को,
विनाश और तबाही के,
द्वार तक ला खड़े हैं,
हमनें पढ़ा है कि,
दुनिया से कई विकसित सभ्यताएं,
हो चुकी हैं नष्ट,
हो चुका है उनका विनाश,
इसलिए
आत्मचिन्तन, मूल्यांकन और समीक्षा,
हमें करना है कि,
क्या पाया! क्या खोया हमनें!

ये साज़िशों का दौर है

ये साज़िशों का दौर है,
जरा सम्भल कर चला करो,
दिल की हर बात,
जुबां से ना कहा करो,
दिल पर लगे चोट तो,
बिना आह! सह लिया करो,
निभाना है साथ, गर!
अपना मुंह सी लिया करो,
ये साज़िशों का दौर है।
जरा सम्भल कर चला करो।।
आबो-हवा में घुला जहर,
हर चेहरे पर मास्क है,
सम्भल जाओ तुम जरा,
हाथ रगड़ कर धुला करो,
दिल में गुबार है भरा,
पर मिलने पर हंसा करो।
ये साज़िशों का दौर है।
जरा सम्भल कर चला करो।।

मैं बारम्बार कहता हूँ

मैं बारम्बार कहता हूँ,
कि तुमसे प्यार करता हूँ,
यहीं जीना, यहीं मरना,
नहीं जाना कहीं मुझको,
तेरे पल्लू की छाँवो में,
सुबह से शाम करता हूँ,
तुम्हारे इक इशारे पर,
जमीं ओ आसमां कर दूँ,
मैं बारम्बार कहता हूँ।
कि तुमसे प्यार करता हूँ।।
तेरी भीगी हुई ज़ुल्फ़ों को,
जब तुम गूँथ लेती हो,
उसी जंजीर में बंधने की,
चाहत रोज करता हूँ,
तेरी अंखिया जो बिन बोले,
बहुत सी बात करती हैं,
इन्हीं पलकों के साये में,
मैं आँखे चार करता हूँ,
मैं बारम्बार कहता हूँ।
कि तुमसे प्यार करता हूँ।।

बेटियां हमारी आन हैं

बेटियां हमारी शान हैं।।
बेटियां हमारी आन हैं,
बेटियां हमारी शान हैं,
अपने पापा के होठों की,
प्यारी मुस्कान हैं,
घर आँगन में ख़ुशबू की,
विशेष पहचान हैं,
चहकतीहैं, महकती हैं,
अपनी मम्मा का अभिमान हैं,
भाइयों की कलाई के,
राखी की पहचान हैं,
उनके लिए दुआएं करतीं,
जीवन-गान हैं,
दादा दादी के लिए,
बुढापे की कमान हैं,
पतियों के दिलों की धड़कन,
उनके जीवन का अरमान हैं,
सृष्टि की वाहक संवाहक,
धरा की शान हैं,
बिनाबबेटियों के जो घर हैं,
उनके आँगन सुनसान हैं,
सच! बेटियां हमारी आन हैं।
सच! बेटियां हमारी शान हैं।।
बिना बेटियों के जो घर हैं।
उनके आँगन सुनसान हैं।।

आओ मिल कर दिया जलाएं

विपदा की इस महा घड़ी में,
अपना राष्ट्र धर्म निभाएँ,
एक बने हैं नेक बने हैं,
आपस में हम साथ खड़े हैं,
जग पर हम अपनी छाप चढाएं,
आओ मिल कर दिया जलाएं।।

राष्ट्र आज करता आह्वान,
अखंड ज्योति लेकर,
एक साथ खड़े होकर,
सारे जग को लुभाएं,
अपना आत्मबल बढाएं,
आओ मिल कर दिया जलाएं।।

प्रचंड विपदा की घड़ी जो आ पडी है,
राष्ट्र संयम अनेकता में एकता,
संकल्पों के प्रहार से देश के प्यार से
अपनों से अपनी दूरी बनाकर,
हारी बाजी, जीत जाएं,
एक हैं, हम एक हैं, सबको बताएं,
आओ मिल कर दिया जलाएं।।

प्रणाम है

उस सर्व शक्तिमान सत्ता को,
जिसने रची है, सुन्दर सी दुनिया,
रचे हैं अनगिनत जीव और जन्तु,
पेड़-पौधे, पर्वत और पहाड़,
नदियां, झरने, सूरज और आसमान,
जिसने बनाया है हमको और आपको,
दिया जीवन का अनमोल, उपहार है,
प्रणाम है।।
उस सर्व शक्तिमान सत्ता को।।
जो निमित्त है, हमारे जीवन का,
जिसने रची हमारी सुन्दर सी काया,
आलोकित किया हमारा पथ,
रचा, वृहद मस्तिष्क सबसे ऊपर,
जिसके कारण हैं हम श्रेष्ठ जीव,
अखिल ब्रह्मांड से,
श्रद्धा भरे मन से,
झुके हुए तन से, आभार है,
प्रणाम है।
उस सर्व शक्तिमान सत्ता को।।

हौले से मुस्काना तेरा

हौले से मुस्काना तेरा,
दिल के समुन्दर में उतर जाना,
बड़ा सुकून देता है, बड़ा सुकून देता है,
हौले से मुस्काना तेरा।।

ज़ुल्फो का लहराना तेरा,
काली घटाओं सा छा जाना,
बड़ा सुकून देता है, बड़ा सुकून देता है,
हौले से मुस्काना तेरा।।

कोयल सी कूक तेरी,
कानों में घोलती है मिश्री,
आगोश में लेने सा,
बड़ा सुकून देता है, बड़ा सुकून देता है,
हौले से मुस्काना तेरा।।

समय

ये दीवार घड़ी की सुइयां, टिक-टिक करती चलतीं हैं,
पर! खुद पहुंचती नहीं हैं कहीं,
और घूमती रहती हैं उसी परिधि के अन्दर,
लेकिन हमें करतीं हैं संकेत,
उठ जाओ, सुबह हो गयी,
स्वस्थ रहना है और काम पर है जाना,
निर्धारित लक्ष्य को है पाना,
चलना है, चलते जाना, ये दीवार घड़ी की सुइयां।।
टिक-टिक कर देती हैं संदेश, कि जो चलता नहीं समय के साथ,
वह टिक नहीं सकता, आज की प्रतिस्पर्धा में,
मिट जाता है उसका अस्तित्व,
कि जो चलता नहीं समय के साथ,
इतिहास में जो छाये रहे देश के,
संततिया हो चुकी हैं गुम,
करतीं हैं लड़ाई पाने के लिए वसीका,
जो सिद्ध करता है उनका खानदान,
रखते हैं ताल्लुक कि, हैं शासकों के नस्ल हम,
जो कभी करते थे शासन, इस मुल्क पर,
पर! नस्लें जो ना टिक सकीं,
दफ़न हो चुकी हैं, समय के कब्र में,
इसलिए ज़रूरी है, समय के साथ चलना,
कि बना रहे हमारा अस्तित्व,
चलना है, चलते जाना, टिक-टिक कर देती हैं संदेश,
कि जो चलता नहीं समय के साथ, वह टिक नहीं सकता।।

सरस्वती वंदना

दान दो माँ, दान दो,
प्रातः स्मरणीय ज्ञान की देवी, हम सभी को ज्ञान दो,
ज्ञान के प्रकाश से
जीवन पथ उजियार दो,
मानवता की सीख का,
दान दो माँ, दान दो,
प्रातः स्मरणीय ज्ञान की देवी, हम सभी को ज्ञान दो।।

हिन्दी, गणित, विज्ञान,
संस्कृत और अंग्रेजी के साथ,
भूगोल, इतिहास का ज्ञान दो,
दान दो माँ दान दो,
प्रातः स्मरणीय ज्ञान की देवी, हम सभी को ज्ञान दो।।

प्रेम, बंधुत्व, सत्य, अहिंसा,
भाईचारा और नर सेवा का,
अति उमड़ता भाव दो,
दान दो माँ दान दो,
प्रातः स्मरणीय ज्ञान की देवी, हम सभी को ज्ञान दो।।

छल कपट और प्रपंच से,
रख कर हम सभी को दूर,
निर्मल मन और स्वच्छ तन दो,
दान दो माँ दान दो,
प्रातः स्मरणीय ज्ञान की देवी,हम सभी को ज्ञान दो।।

भूख

भूख जो उपजी है हमारे उदर में!
रोटी! हमारी पहली आवश्यक आवश्यकता,
पाषण काल से आज काल तक,
हमनें किया अपना बहुत विकास,
सदैव से करते आ रहे हैं हम पुरुषार्थ!
धी के तीव्र ऊर्ध्व गति के बल पर!
खाया फल खाया फूल और खाया कन्दमूल!
खाया कच्चा और फिर खाया भून!
समय के साथ हुआ ज्ञानार्जन!
हमने जतन से पका कर खाना किया शुरू!
भूख के साथ पौष्टिकता और स्वाद का,
सामंजस्य हम बैठाने में रहे सफल!
अखिल धरा पर हमने की फतह, और उत्तरोत्तर बन रहे हैं,
श्रेष्ठ से सर्व श्रेष्ठ, ज्ञानी से महा ज्ञानी!
घास-पात, फल-फूल, अनाज और मांस से आगे बढ़कर,
हम खा रहे हैं! सांप, चमगादड़, नेवले, छिपकली और घोंघे!
क्षुधा तृप्ति से बहुत आगे निकल चुके हैं हम, मिटाने तन की भूख!
जिसमें जीवों को वध कर बनाते हैं,
इत्र, कामोत्तेजक दवाएं और कैप्सूल
पर हम इतने पर भी, कहाँ हैं रुकने वाले!
बढ़ चुकी है भूख, हमारे मस्तिष्क की!
और हम करना चाहते हैं, सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी मुट्ठी में,
इसीलिए हमने बनाए जैविक हथियार!
पर अति होती है बुरी,
अब घुट रहा है, हमारा दम! फूल रही हैं श्वास!
हम दुबके हैं घरों में! बचाने के लिए अपना जीवन!
पर यह भूख ही है! हमारे तन की, मन की, मस्तिष्क की,
जो हमें खाद्य श्रृंखला तोड़ने को, करती है उद्वेलित!
लगता है यह भूख इतनी गयी है बढ़!
कि ख़त्म कर देगी हमारा अस्तित्व!
यह भूख तन की मन की मस्तिष्क की!
धी का आशय ज्ञान और बुद्धि से है।

धर्म और विज्ञान

धर्म और विज्ञान! विषय है बहस का कि कौन है श्रेष्ठ!
इंसान बंट चुका है वैचारिक रूप से, दो भागों में!
एक धर्म को कहता है श्रेष्ठ!
तो दूसरा कहता है कि विज्ञान ही है, हमारे जीवन का आधार!

धर्म है जो हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध और जैन!
सबके हैं अपने एक निश्चित ईश्वर!
उनका नाम लेकर मिलता है सबको चैन!
एक दूसरे से बड़े हैं, एक दूसरे के मालिक,
सबकी पूजा पद्धति है नेक पर अनेक,
लेकिन सब लड़ते हैं परस्पर, कि हम ही हैं सर्वश्रेष्ठ!
धर्म और विज्ञान! विषय है बहस का कि कौन है श्रेष्ठ!

विज्ञान जो देता है हमें क्रमबद्ध ज्ञान,
परिकल्पना, अवलोकन, अध्ययन,
और प्रयोग से मिलता है, कुछ धनात्मक परिणाम,
जो होता है मानवता के लिए वरदान,
सुई-दवाई, रेल, साईकिल, रोबोट,
पर जब हम करते हैं शोध का अंत,
और गिरते हैं औंधे मुँह, नहीं मिलता है अपेक्षित परिणाम!
किसी प्रिय जन का होता है, दुःखद अंत!
नहीं बचा पाता आधुनिक विज्ञान उनका जीवन,
तब! कहते हैं सभी, ईश्वरेच्छा थी यही,
तब भरता है घाव, मिलता है सुकून!
उबर जाते हैं घनघोर निराशा और अवसाद से,
यह धर्म ही है जिसमें, सन्निहित है सर्वोच्च सत्ता का भाव,
जो घनघोर निराशा और अवसाद में,
जगाता है, एक सूक्ष्म आशा का भाव,
मानवता के लिए दोनों ही हैं श्रेष्ठ, और हमें मानना चाहिए कि,
धर्म और विज्ञान दोनों ही हैं, हमारे जीवन का आधार,
दोनों में बनाये रखना है संतुलन, दोनों ही हैं श्रेष्ठ!
धर्म और विज्ञान! हाँ! सच मानें दोनों ही हैं श्रेष्ठ!

हार ही जीत है

हार! होता है पहला कदम,
है पहली शर्त जीत की!
सफल जीवन रीति की,
है सुन्दर भविष्य गीत की!

हार! उमंग, आनंद, उड़न पंख,
है आभास स्वर्णिम काल की!
हार! प्रेरणा है, पुरस्कार है,
है प्रथम प्रतिफल जीत की!

हार! निराशा है, कुंठासेतु है,
है सुन्दर सम्भावित उपहार की!
हार! के बिना हम वास्तव में,
स्वाद ना जान पायेंगे, जीत की!

हार! से लेते हैं सबक, रचते हैं हौसला,
है जिन्हें छूना बुलंदी जीत की!
हार! दृढ़ हठ, कठोर संकल्प पर्याय,
है जीत के बाद मिले फूलों के हार की!

हार! होता है पहला कदम,
है पहली शर्त जीत की!

सफलता

बिछाना होगा धैर्य का बिछावन!
ओढ़नी होगी पुरुषार्थ की चादर!
माँ-बाप, गुरुजनों के आशीर्वाद से!!

सच्चे और अच्छे मन से बोना होगा कर्म बीज!
करनी होगी समीक्षा, करना होगा आत्म चिंतन!
नहीं रखना होगा अशेष, अभीष्ट लक्ष्य को पाने में!

बिना शोर-शराबे के करना होगा, अहर्निश प्रयास!
तब उगेगा सफलता का मार्तंड, भागेगा तम!
होगी गूंज, उठेगी खुशियाँ अन्तर्मन में!
छंटेगा अंधियारा अपने जीवन से!

बस! बिछाना होगा धैर्य का बिछावन!
ओढ़नी होगी पुरुषार्थ की चादर!
माँ-बाप, गुरुजनों के आशीर्वाद से!!

माँ

माँ, धर्म है .....
माँ, कर्म है.....
माँ, मर्म है .....
माँ, स्नेह है.....
माँ, प्रकाश और ऊर्जा का अनवरत स्रोत है!

माँ, विचार है.....
माँ, संस्कार है.....
माँ, आधार है.....
माँ, स्वाभिमान है.....
माँ, जीवन सार और कुटुम्ब की ओत है!

माँ, मलय है .....
माँ, शोला है .....
माँ, दूध है.....
माँ, रोटी है .....
माँ, जीवन प्रेरणा और जीवन जोत है!

माँ, रामायण है.....
माँ, महाभारत है.....
माँ, महाग्रंथ है .....
माँ, अखंड है.....
माँ, महामानव और विशाल पोत है!

माँ, आदि है....
माँ, शक्ति है.....
माँ, भक्ति है.....
माँ, प्रेम है.....
माँ, करुणा और ममत्व से ओत-प्रोत है!

हमें रुकना होगा!

हमें रुकना होगा,
विचार करना होगा!
सुरक्षा के नाम पर।।
हमने जमा किये कई ऐसे सामान,
जो जरा सी लापरवाही पर,
बन गया तबाही का सामान,
गलाघोट कर पूरी दुनिया का,
खास-खास कर मरने के लिए
हैं विवश,
नहीं बन पाया कोई टीका,
कोई दवाई,
सिर्फ अपनों से दूर रहना,
घरों में कैद होना ही,
बचा है एक विकल्प,
हमें लेना होगा एक संकल्प,
सुरक्षा के नाम पर,
ना करें, ऐसे जैविक हथियारों का निर्माण!
हमें रुकना होगा,
विचार, करना होगा!
सुरक्षा के नाम पर।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आज जब अखिल विश्व कोरोना वायरस (कोविड१९) के कारण महामारी के चपेट में आत्मरक्षार्थ सम्पूर्ण बंद है। ऐसे में अपना भारत भी पूर्णतः बंद है। सभी देशवासी सरकारी एडवाइजरी का अनुपालन करते हुए अपने घरों में उचित दूरी बनाकर रह रहे हैं।

दिनचर्या ठप सी हो गयी है। घर में दिन कैसे व्यतीत हो? इस प्रश्न का उत्तर हिन्दी भाषा साहित्य साधना में संनिहित है।

जीवन के भाग-दौड़ और आपा-धापी के कारण जो सम्भव ना हो पाया था। अब वास्तव में मन के भावों को भाषा शब्दोंमें पिरोने और सजोने का यह उपयुक्त समय है, जो किया जा रहा है।

ईबुक्स प्रकाशन हेतु रचनाओं का आमंत्रण जहां हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है वहीं अन्तरा शब्द शक्ति साहित्य समूह की एडमिन आदरणीया डॉ.प्रीति समकित सुराना जी हिन्दी साहित्य को नित नयी ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए अनवरत कृत संकल्पित हैं जो वास्तव में बधाई की पात्र हैं।

अंत में सुधी पाठकों समेत सभी साहित्य प्रेमी साथियों व डाक्टर प्रीती समकित सुराना जी का सहृदय आभार।

रचनाकार

रामप्रताप वर्मा

मौहरिया, छावनी सरकार (आनंदपुरी)
आर.टी.ओ. ऑफिस के पीछे
प्रधान डाकघर जेलरोड, गोंडा
(उ.प्र.) २७१००१

Email- rpverma8004005545@gmail.com
Mobile - 8004005545

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-167-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/